P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-8* November- 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

सामाजिक समरसता का अमृत कलश 'मधुशाला'

Madhusala The nectar Urn of social Harmony

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

अनूप सिंह
सह आचार्य,
हिंदी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
थानागाजी, अलवर
राजस्थान, भारत

सारांश

'मधुशाला' हरिवंशराय बच्चन की कालजयी कृति है। जितना मधुर इस कृति का 'पाठ' है, उतना ही मधुर है, इसका संदेश। सामाजिक विषमताओं का शमन एवं समाधान इसका आधार है। कुछ विद्वान और पाठक अपनी स्थूल सोच के कारण मधुशाला की कीर्ति को धुंधला करने की नाकाम कोशिश करते रहे हैं। ऐसे लोग अंधेरे के बाद होने वाले प्रकाश को कभी नहीं देख पाते हैं। ये लोग हाला, प्याला, साकी और मदिरा आदि शब्दों में ही उलझकर रह जाते हैं। 'मधुशाला' कोई पीने का स्थान नहीं है अपितु यह तो जीवन–दर्शन है। मधुशाला तो वह स्थिति है जहाँ पहुँचकर मनुष्य के समस्त संताप मिट जाते हैं। मनुष्य अपना–पराया, सुख–दुख और राग–द्वेष से विलग हो जाता है। विद्वानों ने मधुशाला को प्रेम और मस्ती का काव्य कहा है। इसी प्रेम और मस्ती के बीच 'मधुशाला' सामाजिक सौहार्द का अनुपम और विराट संदेश भी देती है। युगों से नफ़रत की आग में जलती मानवता को 'मधुशाला' अपनी सहिष्णुता के शीतल छीटों से धीरे–धीरे शांत करती हुई पूर्णतः भिगो देती है। जिसे लोग मयखाना समझते रहे थे वह 'मधुशाला' जीवन और समाज के उपचार के रूप में उभरती है। धर्म और जाति के नाम पर लड़ने वालों पर कवि आक्षेप करता है। अपनी सहूलियत के अनुसार पंथ खड़ा करने वालों को 'मधुशाला' आईना दिखाती है तथा जीवन की एक नई शैली प्रस्तुत करती है। मधुशाला वह स्थान है जहाँ मनुष्य की विध्वंसक सोच समाप्त हो जाती है। कवि के अनुसार समाज को तोड़ने के प्रयास कभी मंद नहीं पड़ते हैं, विचारधाराओं को थोपने का संघर्ष जारी रहता है, ऐसे में मधुशाला सही रास्ता दिखाती है। भारत जैसे देश में जहाँ जाति, भाषा और धर्म एक सच है वहाँ मधुशाला का महत्व और भी बढ़ जाता है। अच्छा होगा कि समीक्षा अथवा आलोचना की अपेक्षा 'मधुशाला' का सामाजिक दृष्टि से अध्ययन हो।

The 'Madhushala' is a classical work of Harivansarai Bachchan. The sweeter is the 'text' of this work, the sweeter it is, its message. Mitigation and resolution of social inequalities is its basis. Some scholars and readers have been trying unsuccessfully to blur the Kirti of the tavern due to its macro thinking. Such people never see the light that happens after dark. These people, however, remain entangled in words like cup, saki and liqueur. The 'tavern' is not a place to drink but it is a philosophy of life. The tavern is a condition where all the miseries of humans disappear. Man becomes alienated from his alien, happiness, sorrow and rage. Scholars have called the tavern a poem of love and fun. Amidst this love and fun, 'Madhushala' also gives a unique and great message of social harmony. In the fire of hatred for ages, humanity has been soaked to the fullest, slowly 'silencing' the soft peels of its tolerance. What the people had thought of as a banquet is that the 'tavern' emerges as a treatment for life and society. The poet attacks those who fight in the name of religion and caste. According to its convenience, the 'Madhushala' mirror shows the cultists and presents a new style of life. The tavern is the place where the destructive thinking of man ends. According to the poet, efforts to break the society are never slow, the struggle to impose ideologies continues, in such a way the tavern shows the right path. In a country like India, where caste, language and religion are true, the importance of the tavern increases even more. It would be better to have a social study of the 'tavern', expecting review or criticism.

मुख्य शब्द : सहिष्णुता, विध्वंसक, हाला, प्याला, मयखाना, साकी, तिरस्कार, बहिष्कार, वैमनस्य, समरसता, अस्तित्व, परिवर्तित, विडंबना, पंथ,

छुआछूत, विभाजनकारी, नीयत, नीति, स्वार्थवश, टीस, नस्लीय हिंसा, त्रस्त, वैषम्य, दृष्टिकोण।

Tolerance, Destroyer, Wine, Jar/Bowl, Bar, Bargirl, Scorn, Boycott, Contempt, Harmony, Existence, Change, Irony, Cult, Touchable, Divisive, Intent, Policy, Selfishness, Tees, Racial Violence, Stricken, Dissent, Apporach.

प्रस्तावना

बच्चन ने सामाजिक सौहार्द में सबसे बड़ी बाधा धर्मस्थलों को माना है। उन्होंने मधुशाला के माध्यम से इनके खोखलेपन को उजागर किया है। मंदिरों और मस्जिदों मे व्यक्ति को दुत्कारा जाता है। स्वयं को महान सिद्ध करने के चक्कर में धार्मिक स्थल मनुष्य में भेद करते हैं। बच्चे प्रश्न उठाते हैं कि यह कैसा धर्म है जो जोड़ने की अपेक्षा मनुष्य का तिरस्कार करता है। ये कैसे धार्मिक स्थल हैं जहाँ पहचान करके प्रवेश दिया जाता है–

दुतकारा मस्जिद ने मुझको
कहकर है पीने वाला,
ठुकराया ठाकुरद्वारे ने
देख हथेली पर प्याला[1]

कवि कहता है कि विभेदकारी सोच रखने वाले इन धार्मिक स्थलों की मुझे चाहत नहीं है। यदि मंदिर और मस्जिद मेरा बहिष्कार करते हैं तो मुझे अफ़सोस नहीं है। मधुशाला के समक्ष ये फीके हैं–

मुझे ठहरने का हे मित्रो
कष्ट नहीं कुछ भी होता
मिले न मंदिर, मिले न मस्जिद
मिल जाती है मधुशाला।[2]

मस्जिद और मधुशाला की तुलना नहीं हो सकती है। मस्जिद में निश्चित समय के बाद वीरानी छा जाती है। इसलिए बच्चन ने मस्जिद को विधवा कहा है। दूसरी ओर मधुशाला में सदा महफिल सजती है–

शेख, कहाँ तुलना हो सकती
मस्जिद की मदिरालय से,
चिर–विधवा है मस्जिद तेरी
सदा–सुहागिन मधुशाला।[3]

बच्चे का मानना है कि हिंदू और मुसलमान का भेद मंदिर–मस्जिद के कारण होता है। उनके प्रभाव के कारण दोनों धर्मों में वैमनस्य बना रहता है। लेकिन, मधुशाला सामाजिक भाईचारे का पाठ पढ़ाती है। मधुशाला में आकर मनुष्य हिंदू या मुसलमान नहीं अपितु मनुष्य रहता है। शत्रु की अपेक्षा सच्चा साथी बन जाता है। वर्तमान में जब हिंदू और मुसलमान एक–दूसरे को शंका की दृष्टि से देखते हैं तो 'मधुशाला' सामाजिक समरसता का अचूक उपचार प्रदान करती है–

मुसलमान औ हिंदू हैं दो
एक, मगर उनका प्याला
एक मगर, उनका मदिरालय
एक, मगर, उनकी हाला
दोनों रहते एक न जब तक
मस्जिद–मंदिर में जाते
बैर बढ़ाते मस्जिद–मंदिर
मेल कराती मधुशाला।[4]

'मधुशाला' का इतना अधिक प्रभाव होता है कि कट्टर ब्राह्मण अथवा नमाजी में द्वेष की भावना सदा के लिए समाप्त हो जाती है। मधुशाला का इनके प्रति व्यवहार, मित्रवत रहता है–

कोई भी हो शेख नमाजी
या पंडित जपता माला
बैर भाव चाहे जितना हो
मदिरा से रखने वाला
एक बार बस मधुशाला के
आगे से होकर निकले,
देखूं कैसे थाम न लेती
दामन उसका मधुशाला।[5]

मनुष्य ने अहंकार के वश होकर अलग–अलग पंथ खड़े कर लिए हैं। पर, एक दिन उसे अवश्य समझ में आएगा और मधुशाला की महत्ता को समझेगा। उसके बाद मेरा व तेरा का भेद मिट जाएगा। मानव, बस मानव रहेगा। धर्म के आधार पर बना अस्तित्व मानवता में परिवर्तित हो जाएगा–

आज करे परहेज जगत, पर
कल पीनी होगी हाला
आज करे इनकार जगत, पर
कल पीना होगा प्याला
होने दो पैदा मद का महमूद
जगत में कोई, फिर
जहाँ अभी है मंदिर–मस्जिद
वहाँ बनेगी मधुशाला।[6]

बच्चन कहते हैं कि यह कैसी विडंबना है कि मनुष्य पहले तो अपने–अपने पंथों का निर्माण करता है और उसके बाद एकता और भाईचारे का संदेश बाँटता है। इस प्रकार की झूठ तो कभी न कभी पकड़ी ही जाती है। पंथों के स्वामियों से कोई यह पूछे कि तुम एकता का संदेश कैसे दे सकते हो, तुमने तो विभाजित होने के लिए ही अलग पंथ का निर्माण किया था। तुम्हारी नीयत और नीति विभाजनकारी हैं। समाज को जोड़ने व सुधारने का कार्य तो मधुशाला ही करती है। 'मधुशाला' में कोई छुआछूत नहीं है, सब एक हैं–

कभी नहीं सुन पड़ता, इसने
हाँ, छू दी मेरी हाला
कभी न कोई कहता, उसने
जूठा कर डाला प्याला
सभी जाति के लोग यहाँ पर
साथ बैठकर पीते हैं
सौ सुधारकों का करती है
काम अकेली मधुशाला।[7]

इसलिए, हे मनुष्य! जो धर्म के ठेकेदार, तुझे ईश्वर का भय दिखाकर तुझमें भेद करते हैं, ऐसे ठेकेदारों को त्याग दे, क्योंकि–

व्यर्थ बन जाते हो हरिजन
तुम तो मधुजन ही अच्छे
ठुकराते हरि–मंदिरवाले,
पलक बिछाती मधुशाला।[8]

मधुशाला केवल पंथ–भेद का ही निवारण नहीं करती अपितु अमीर–गरीब के भेद को भी मिटा देती है–

रंक–राव में भेद हुआ है
कभी नहीं मदिरालय में
साम्यवाद की प्रथम प्रचारक
है यह मेरी मधुशाला।[9]

कवि कहता है कि जीवन स्पर्धा नहीं है। सामाजिक समरसता के लिए अतिक्रमण का निषेध आवश्यक है। दूसरों को व्यथित करके सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। किसी का हक छीनने की अपेक्षा सम्मान करना होगा–

नहीं चाहता, आगे बढ़कर
छीनूं औरों का प्याला
नहीं चाहता धक्के देकर
छीनूं औरों का प्याला[10]

बच्चन को पीड़ा है कि हमने स्वार्थवश सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ दिया है। धर्म, जाति व भाषा के नाम पर लड़ते देखकर कवि के मन में टीस उभर जाती है–

फिर भी वृद्धों से जब पूछा
एक यही उत्तर पाया–
अब न रहे वे पीनेवाले
अब न रही वह मधुशाला।[11]

सामाजिक सौहार्द और समरसता का आह्वान करते–करते 'मधुशाला' विश्व–कल्याण की कामना करती है। अब सीमाओं के लिए युद्ध न हों। नस्लीय हिंसा समाप्त हो। मज़हबी आतंकवाद का नाश हो। एक ऐसे विश्व का निर्माण हो जहाँ मनुष्य का मनुष्य से प्रेम व भाईचारे का संबंध हो। जहाँ सभी को समान अवसर मिले तथा सभी की आवाज सुनी जाए–

विश्व, तुम्हारे विषमय जीवन
में ला पाएगी हाला,
यदि थोड़ी–सी भी यह मेरी
मदमाती साकी बाला
शून्य तुम्हारी घड़ियाँ कुछ भी
यदि यह गुंजित कर पाई
जन्म सफल समझेगी जग में
अपना मेरी मधुशाला
जग में मेरी मधुशाला।[12]

साहित्यावलोकन

रमा देवी सी. बच्चन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां (शोध प्रबंध १९८८) हिंदी विभाग कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय। फरहत शबाना, छायावादोत्तर हिंदी गीति काव्य में हरिवंश राय बच्चन का योगदान (यशोध प्रबंध १९९४) हिंदी विभाग अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ सूरी बृजबाला, हरिवंश राय बच्चन के काव्य का हालावाद के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध 2012) हिंदी विभाग तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ पुणे। शर्मा एच. के. हालावाद और बच्चन य (ब्लॉग, मार्च 2017)

अध्ययन के उद्देश्य

'मधुशाला' साहित्य जगत की अनुपम कृति है। इसे पीने एवं पिलाने वालों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता है। जगत में जितना भी सत्य, शिव और सुंदर है, वह 'मधुशाला' में है। प्रस्तुत शोधपत्र का लक्ष्य भी सत्य, शिव और सुंदर का प्रकटीकरण है। कोई काव्य कृति भी सामाजिक वैशम्य का समाधान हो सकती है, इसका उत्तर मधुशाला में 'हाँ' के रूप में है। जैसे–जैसे हम 'मधुशाला' में रमते जाते हैं; वैसे–वैसे मय, मधु, हाला और प्याला शब्द गौण होते जाते हैं और जीवन का सच सामने आता जाता है। वर्तमान में जब भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व हिंसा और नफ़रत से त्रस्त है तो 'मधुशाला' उसका निवारण हो सकती है। 'यह रचना मनुष्य, समाज तथा विश्व का कल्याण करने की दृष्टि प्रदान करती है'– यह बात इस शोधपत्र में उभरती है। यह शोधपत्र उन सामाजिक अध्येताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा जो अब तक समाजशास्त्रियों के विचारों से बाहर नहीं निकल पा रहे थे तथा जिनका ध्यान साहित्यिक कृतियों की ओर नहीं गया था।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि बच्चन की 'मधुशाला' एक ऐसी कृति है जिसमें सामाजिक सौहार्द और भाईचारे का सुखद और व्यापक दृष्टिकोण छुपा हुआ है। जो लोग धर्म और जाति के भेद के कारण समाज में विष फैलाते हैं, ऐसे लोगों पर 'मधुशाला' आक्षेप करने के साथ–साथ जीवन का नया दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करती है। मंदिर और मस्जिद की दुत्कार 'मधुशाला' में आकर प्यार में परिवर्तित हो जाती है। हिंदू–मुसलमान, ऊँच–नीच तथा अमीर–गरीब 'मधुशाला' की शरण पाकर एक हो जाते हैं। मन व जन्म के भेदों और शंकाओं का समाधान हो जाता है। मनुष्य को विराटता के दर्शन हो जाते हैं। अब उसके सामने प्रत्येक मनुष्य का महत्त्व है। अब वह मनुष्य को मनुष्य मानकर भाईचारे व समरसता के साथ रहना चाहता है। उसके सामने से पंथों, धर्मों और भाषाओं का भ्रम समाप्त हो जाता है। बच्चन अपनी 'मधुशाला' में ऐसे ही सामाजिक सौहार्द के दर्शन भटकी हुई मानवता को करवाना चाहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *हरिवंशराय बच्चनः मधुशाला (मई 2007), हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 46, पृष्ठ 56*
2. *वही, रुबाई 47, पृष्ठ 57*
3. *वही, रुबाई 48, पृष्ठ 58*
4. *वही, रुबाई 50, पृष्ठ 60*
5. *वही, रुबाई 51, पृष्ठ 61*
6. *वही, रुबाई 53, पृष्ठ 63*
7. *वही, रुबाई 57, पृष्ठ 67*
8. *वही, रुबाई 58, पृष्ठ 68*
9. *वही, रुबाई 59, पृष्ठ 69*
10. *वही, रुबाई 104, पृष्ठ 114*
11. *वही, रुबाई 125, पृष्ठ 135*
12. *वही, रुबाई 134, पृष्ठ 144*